: अनुमान के भेद :

अनुमान प्रमाण के निम्नलिखित तीन प्रकार के भेद हैं —

(i) मनोवैज्ञानिक दृष्टि से — स्वार्थानुमान और परार्थानुमान।

(ii) प्राचीन न्याय के अनुसार — पूर्ववत् शेषवत् और सामान्यतोदृष्ट।

(iii) नव्य न्याय के अनुसार — केवलान्वयी केवलव्यतिरेकी और अन्वयव्यतिरेकी।

(i). मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अनुमान के प्रकार :→

⇒ स्वार्थानुमान :→ जब हम स्वयं के लिए अनुमान करते हैं तो उसे स्वार्थानुमान कहते हैं। जैसे, कोई व्यक्ति पहाड़ पर धुँआ देखता है, तो सोचता है कि अवश्य ही पर्वत पर आग है क्योंकि जहाँ-जहाँ धुँआ होता है; वहाँ-वहाँ आग होती है, जैसे- रसोई घर में। इस प्रकार से सामान्यतः यह निम्न तीन वाक्यों में पूर्ण होता है —

पर्वत पर आग है — (पक्ष)
क्योंकि पर्वत पर धुँआ है — (हेतु)
जहाँ-जहाँ धुँआ होता है, वहाँ-वहाँ आग होती है; जैसे चूल्हे में। — (साध्य)

⇒ परार्थानुमान :→ जब किसी बात को दूसरों को समझाने के लिए अनुमान करते हैं, तब उसे परार्थानुमान कहते हैं। इसमें पाँच वाक्यों में अनुमान की प्रक्रिया पूर्ण होती है, इसलिए इसे 'पंचावयव' भी कहा जाता है। ये पाँच वाक्य हैं —

(i). पर्वत पर आग है — प्रतिज्ञा।
(ii). क्योंकि वहाँ धुँआ है — हेतु (चिन्ह)।
(iii). जहाँ-जहाँ धुँआ है, वहाँ-वहाँ आग है, जैसे चूल्हे में — उदाहरण।
(iv). पर्वत में धुँआ है — उपनय।
(v). इसलिए पर्वत में आग है — निगमन।

(2) प्राचीन न्याय के अनुसार :-

(i) पूर्ववत् अनुमान :→ 'पूर्ववत्' शब्द दो शब्दों से बना है - 'पूर्व + वत्'। 'पूर्व' अर्थात् 'पहले' (कारण) तथा 'वत्' का अर्थ है - 'अनुसार'। इस प्रकार पूर्ववत् का अर्थ है - 'कारण के अनुसार'। अत: पूर्ववत् अनुमान वह है जहाँ कारण को देखकर कार्य का अनुमान हो। जैसे - काले बादल वर्षा का कारण है। अर्थात् आकाश में काले बादल देखने के बाद यह अनुमान करना कि वर्षा होगी, पूर्ववत् अनुमान है।

(ii) शेषवत् अनुमान :→ यह पूर्ववत् का उल्टा है, क्योंकि यहाँ 'शेष' का अर्थ ही होता है - 'बाद का' अर्थात् 'कार्य'। अत: शेषवत् का अर्थ है - 'कार्य के अनुसार'। इस तरह से शेषवत् अनुमान में ज्ञात कार्य के आधार पर अज्ञात कारण का अनुमान किया जाता है। जैसे कि, रात में सो कर उठने के पश्चात् प्रात: काल में चारों ओर पानी बहता देख कर रात में वर्षा होने का अनुमान करना।

(iii) सामान्यतोदृष्ट अनुमान :→ 'सामान्योदृष्ट' का अर्थ है - सामान्यतया जैसा कि देखा जाता है। तो हम जब सामान्यतया जैसा देखते हैं, उस आधार पर अनुमान करते हैं, तब इसे सामान्यतोदृष्ट अनुमान कहते हैं। यहाँ पूर्व के दो अनुमानों के समान कार्य-कारण संबंध को नहीं देखा जाता बल्कि सामान्य रूप से जो सादृश्य हम देखते हैं, उसे ही आधार बनाया जाता है। जैसे - सामान्यतया हम सींग वाले पशु की पूँछ भी देखते हैं या चन्द्रमा को भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न देखते हैं तो, हम सहजतया से यह अनुमान करते हैं कि पशु की पूँछ भी होगी अथवा चन्द्रमा गतिशील है आदि। यही सामान्यतोदृष्ट अनुमान है।

नव्य न्याय के अनुसार भेद :-

अनुमान का यह प्रकार भेद विशेषत: नव्य नैयायिकों के द्वारा प्रस्तुत किया गया है क्योंकि यह व्याप्ति को स्थापित करने वाली भिन्न भिन्न विधियों पर आधारित है। वे हैं - (3)

(i). केवलान्वयी अनुमान :→ यह अनुमान अन्वय पर आधारित होता है। अन्वय से तात्पर्य है 'साहचर्य' अर्थात् साथ-साथ पाया जाना। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि एक के उपस्थित होने पर दूसरे का उपस्थित रहना अन्वय है।
जैसे - सब ज्ञेय पदार्थ अभिधेय हैं। (नाम से पुकारने योग्य है)
घट ज्ञेय पदार्थ है,
अत: घट अभिधेय है।

(ii). केवल व्यतिरेकी अनुमान :→ इसमें व्याप्ति की स्थापना नकारात्मक उदाहरणों द्वारा संभव होती है। इसलिए इसे केवल व्यतिरेकी अनुमान कहा जाता है। जैसे कि,
"जो अन्य भूतों से भिन्न नहीं है, उसमें गंध का गुण नहीं होता, पृथ्वी में गंध का गुण होता है।
इसलिए पृथ्वी अन्य भूतों से भिन्न है।"

(iii). अन्वय व्यतिरेकी अनुमान :→ जिसमें व्याप्ति की स्थापना अन्वय तथा व्यतिरेकी दोनों विधियों से हो। अर्थात् जहाँ पर भावात्मक और अभावात्मक दोनों प्रकार के उदाहरण दिये जा सकते हों, वह अन्वय व्यतिरेकी अनुमान है। जैसे -

(a). सभी धूम्रवान वस्तुएँ अग्नियुक्त हैं।
पहाड़ धूम्रवान है → (अन्वय)
इसलिए पहाड़ पर अग्नि है।

(b). सभी अग्निरहित पदार्थ धूम्रहीन हैं।
पहाड़ धूम्रयुक्त है → (व्यतिरेक)
अत: पहाड़ अग्नियुक्त है।

इस प्रकार से दोनों प्रकार से उदाहरण किये जाने वाला अनुमान अन्वय व्यतिरेकी अनुमान है।

—×—